



लेडी विल्किंसन & नैरेटिव

मैं अलविदा कहकर निकलने ही वाला था कि उन्होंने पूँछ की एक आखिरी फटकार से मुझे रोक लिया।

“क्या तुम सचमुच मुझे ऐसे छोड़कर जा रहे हो?”

फिर कब मिलोगे?

रुको, मुझसे बातें करो।

पछताओगे नहीं।

मैगी का वचन।”

मेरी छुट्टी की योजना सीधी-सादी थी।

दो दिन।

अगली शाम मुझे उड़कर इटली लौटना था।

मगर एक बुजुर्ग कुलीन लेडी लंदन से पुकार रही थीं, और मैं, आधे खून का कालाब्रियाई, उन्हें अनसुना करने का नाटक नहीं कर सकता था।

“आप चाहेंगी कि मैं आपको कितना वक्त दूँ?”

उनकी आँखें फैल गईं।

एक पल को वे ऐसी दिखीं मानो उन्होंने मुझे ठीक से सुना ही न हो।

मानो उनसे समझने में भूल हुई हो।

मगर नहीं।

बोलने वाला सचमुच मैं ही था।

और उन्होंने, तजुर्बे से लैस और सोच की पूरी स्पष्टता से नवाज़ी गई एक अंग्रेज़ औरत ने, मौक़ा फ़ौरन पहचान लिया।

मुस्कुराते हुए उन्होंने जवाब दिया:

“पूरी उम्र।”

दुनिया में कहीं भी जब कोई औरत कहती है:

“पछताओगे नहीं,”

तो इसका मतलब है कि उसके पास आपके लिए पहले से एक या एक से ज़्यादा सरप्राइज़ तैयार रखे हैं।

यह वह बात थी जो मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में, अपने बहुसांस्कृतिक तजुबों के भीतर सीखी।

जिन औरतों से मैं मिला, वे कभी कोई संख्या नहीं थीं।

वे बस उस दुनिया का उद्गम थीं जिसका मैं था।

मैं अपने होटल लौटूँगा और वहाँ वालों को अपनी खानगी की नई योजना बता दूँगा।

उन्हें मैं पाँच दिन दूँगा।

इससे कम मैं क्या ही दे सकता था।

मगर मुझे जाने देने से पहले उन्होंने मुझे एक बार फिर रोका और कहा:

“जिस औरत को तुम आज माँ कहते हो, वह मेरी सहेली है।

हम एक ही जंग में लड़ी थीं।

किस्मत आखिरकार हमें अलग-अलग दिशाओं में ले गई, मगर हम दोनों में से किसी ने भी अपने को भूलने की छूट नहीं दी।

इज़ज़त सच्ची बनी रही।

इज़ज़त दोतरफ़ा बनी रही।”

फिर उन्होंने मुझे उस शांत यक्रीन से देखा जो उसी में होता है जो पहले ही कई ज़िंदगियाँ जी चुका हो, और धीमे से वे शब्द कहे जिन्होंने सब कुछ बदल दिया:

“स्वागत है, भांजे।”

फर्दिनांदो